Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 1, January-2021, ISSN 2230-7540

उच्च माध्यमिक स्तर पर गृह विज्ञान शिक्षण की अवधारणा, प्रकृति, उद्देश्य, महत्व तथा उपयोगिता का अध्ययन

Dr. Rani Mahto*

Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan

सारांश - *गृह विज्ञान वस्तुतः गृह अथवा परिवार से सम्बन्धित वह शास्त्र है जो गृहकला, गृह प्रबन्ध एवं सज्जा से सम्बन्धित घरेलू कला, घरेलू अर्थशास्त्र तथा घरेलू प्रशासन की विभिन्न समस्याओं व जटिलताओं का निराकरण करने का सफल प्रयास करता है। यह निर्देशन का विशिष्ट विषय है जिसमें घर परिवार द्वारा व्यक्तियों तथा समूहों द्वारा पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को समुन्नत बनाने का प्रयास किया जाता है। संकुचित अर्थ में गृह विज्ञान, गृह परिवार, समाज, स्वास्थ्य, खान-पान, आचार-व्यवहार, उपचार आदि की व्यावहारिक समस्याओं के विशिष्ट सन्दर्भ में आधारीय विज्ञानों का अध्ययन मात्र है। भारत शहरों तथा गाँवों का देश है। जहाँ अब 40% लोग शहरों में निवास करते हैं वहीं 60% लोग गाँवों में निवास करते हैं। शिक्षा की दृष्टि से शहरों में निवास करने वाले लोगों के बच्चे शहरी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं तो गाँव में रहने वाले लोगों के बच्चे ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययरनत होते हैं। सुविधा की दृष्टि से शहरी विद्यालयों के संसाधनों की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों की स्थिति अच्छी नहीं होती। इसका प्रभाव विद्यार्थियों की निष्पित्ति पर पड़ता है। शहरों के बच्चे ट्यूशन, कोचिंग इत्यादि के द्वारा विद्यालयों में शिक्षा के समय जिन चीजों को नहीं समझ पाते हैं, उनको घर पर समझ लेते हैं जबकि गाँव के बच्चे विद्यालयों की पढ़ाई पर ही पूर्णतः आश्रित होते हैं। अतः इस अध्ययन हेतु ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को चुना गया है। अतः आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों के गृह विज्ञान के वास्तविक ज्ञान में बृद्धि एवं ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु वर्तमान स्थिति का पता लगाया जाये, ग्रामीण एवं शहरी स्तर के गृह विज्ञान शिक्षण व्यवस्था का वास्तविक स्थिति का जायजा लिया जाये। इसके बाद ही गृह विज्ञान शिक्षण को उन्नत बनाने हेतु कोई उपाय खोजा जा सकता है। किसी भी समस्या का उचित समाधान, समस्या की वर्तमान स्थिति का पता लगाने के पश्चात् ही किया जा सकता है। अतः ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर गृह विज्ञान शिक्षण को समुन्नत बनाने हेतु इस अध्ययन की महत्ती आवश्यकता है।*

मुख्य शब्द - *गृह विज्ञान, अवधारणा, समस्या, प्रकृति, क्षेत्र, महत्व, उपयोगिता एवं उद्देश्य*

----------X----------

भूमिका

बालक का ज्ञान जब लिखने-पढ़ने और गणित की प्रारंभिक क्रियाओं से कुछ ऊपर उठा होगा तो निश्चय ही उसकी बढ़ती हुई जिज्ञासा की संतुष्टि किसी न किसी प्रकार इस तरह के ज्ञान से की गई होगी, जिससे उसे अपने सम्बन्ध में चारों ओर फैले परिवार-समाज के बारे में स्पष्ट ज्ञान हो सके। गृह विज्ञान का ज्ञान भी ऐसा एक क्षेत्र है जिससे बालक को अपने सम्बन्ध में, अपने गृह के सम्बन्ध में, अपने परिवार के सम्बन्ध में तथा अपने समाज के बारे में स्पष्ट ज्ञान करता है। गृह विज्ञान को परिवार और सामाजिक विज्ञानों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह उन सभी अध्ययन विषयों का आधार है जो पारिवारिक मानविकी तथा सामाजिक विज्ञानों की श्रेणी में आता है। यह समाजशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, गृह-परिचर्चा, शिशु पालन-कल्याण, भोजन, परिधान विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र यहाँ तक की कला तथा धर्म संस्कृति के भी अध्ययन का आधार रहा है तथा बालक-बालिकाओं के साथ-साथ मानव की सम्पूर्ण शिक्षा में एक आवश्यक विषय समझा जाता है।

www.ignited.in

गृह विज्ञान घर से सम्बन्धित विभिन्न परिस्थितियों के ज्ञान से परिचित कराने वाला एक सामाजिक विज्ञान है जिसके द्वारा घर, परिवार तथा समाज से सम्बन्धित बातों का अध्ययन किया व कराया जाता है। भारत में पाठ्यक्रम के एक विषय के रूप में गृह-विज्ञान का अध्ययन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही व्यवहार में लाया जाने लगा है। अतएव गृह विज्ञान निर्देशन व मार्गदर्शन का वह विशिष्ट विषय है जिसे घर-परिवार द्वारा तथा व्यक्तियों के अन्य समूहों के द्वारा भोजन, वस्त्र तथा आवास के चुनाव, तैयारी एवं प्रयोग से सम्बन्धित आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, स्वच्छता तथा कलात्मक पक्षों का समावेश होता है।

गृह विज्ञान वस्तुतः गृह अथवा परिवार से सम्बन्धित वह शास्त्र है जो गृहकला, गृह प्रबन्ध एवं सज्जा से सम्बन्धित घरेलू कला, घरेलू अर्थशास्त्र तथा घरेलू प्रशासन की विभिन्न समस्याओं व जटिलताओं का निराकरण करने का सफल प्रयास करता है। यह निर्देशन का विशिष्ट विषय है जिसमें घर परिवार द्वारा व्यक्तियों तथा समूहों द्वारा पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को समुन्नत बनाने का प्रयास किया जाता है। संकुचित अर्थ में गृह विज्ञान, गृह परिवार, समाज, स्वास्थ्य, खान-पान, आचार-व्यवहार, उपचार आदि की व्यावहारिक समस्याओं के विशिष्ट सन्दर्भ में आधारीय विज्ञानों का अध्ययन मात्र है।

अस्तु, गृह-विज्ञान वस्तुतः एक विज्ञान है क्योंकि यह बालिकाओं तथा गृहणियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करता है। विश्व में गृह विज्ञान को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है, यद्यपि उन सभी की विषय वस्तु प्रकृति की दृष्टि से प्रायः समान होती है। इसे गृह विज्ञान (Domestic Science), गृह कला (Domestic Art), घरेलू कला घरेलू प्रशासन (Home hold Administration), घरेलू अर्थशास्त्र (Homehold Economy), नियंत्रणीय वातावरण का विज्ञान (Eutheries), आदि के नामों से पुकारा जाता है। अमेरिका में यह विज्ञान अर्थशास्त्र तथा इंग्लैण्ड और भारत में गृह विज्ञान के नाम से अत्यधिक प्रचलित है।

गृह विज्ञान की अवधारणा

गृह विज्ञान वह विषय है जिसकी सहायता से मानव गृह संस्था का निर्माण करता है। इस विषय द्वारा मानव जीवन के समस्त आदर्षों को प्राप्त करता है। जिसकी नींव 'गृह' में पड़ती है, जैसे स्नेह, आदर, विश्वास, साहस, सहानुभूति, त्याग, विनम्रता और आत्मबल आदि। इसके द्वारा वह प्रेरेम के रहस्य को जानता है जिससे वह अपने परिवार समाज, देश और फिर समस्त मानवता को प्रेम करता है। इस प्रकार से मनुष्य के हृनदय में उसके सर्वोतम वचन तथा कर्म की अभिव्यक्ति होती है। इस विषय की सहायता से मनुष्य को संस्थाओं में से 'गृह' सबसे प्रभावशाली और प्रिय संस्था नजर आती है, जहाँ वह अपने तथा अपने बच्चों के भाग्य का निर्माण व निर्धारण करता है। निःसन्देह एक अच्छा 'गृह' पृथ्वी पर स्वर्ग है जिसमें बालक मनुष्य बनता है। यह वह स्थान है जहाँ अच्छाई तथा बुराई सीखता है। यहीं से वह समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझता है।

अमेरिका के लोक लेसिड सम्मेलन 1902, में गृह विज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है -"अपने अत्यधिक व्यापक अर्थ में गृह अर्थशास्त्र उन नियमों, दशाओं, सिद्धान्तों और आदर्शो का अध्ययन है जो एक ओर तो मानव के तात्कालिक भौतिक वातावरण से सम्बन्धित है तथा दूसरी ओर उसकी मानवीय प्रकृति से, यर्थात में यह दोनों ही कारणों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करता है।"

अमेरिका के लैड ग्रान्ट कॉलेज एसोसियेशन 1924 में गृह विज्ञान की परिभाषा कुछ इस प्रकार से दी है - "गृह अर्थशास्त्र विषया सामग्री का वह अंग है जिसका सम्बन्ध घर की समस्याओं तथा घर से उत्पन्न समस्याओं और उनके अन्तः सम्बन्धों में प्राकृतिक तथा सामाजिक विज्ञान एवं कला के प्रयुक्तिकरण से है।"

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार - "किसी भी ढंग से हम सुधार करने मे असमर्थ रहेंगे जब तक सर्वप्रथम शिक्षा का प्रसार महिलाओं और जन-जन में नहीं हो जाता।" महिलाओं को पढ़ाये जाने के उपरान्त ही परिवार और स्वस्थ्य गृह की रचना को सम्पुष्ट आकार मिल सकेगा। शिक्षित महिलाओं के घरों में महान व्यक्तियों का जन्म होता है। **'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के अनुसार –** "मैं महिलाओं की उचित शिक्षा में विश्वास करता हूँ। भारत का भविष्य महिलाओं के साथ है। महिलाओं से अधिक और कौन प्रभावशाली ढंग से हृदय को प्रभावित कर सकता है।"

आदि काल से विश्व में नारी के इस महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व को स्वीकार किया गया है जिसमें वह मानव के भाग्य का निर्माण करती है। नारी के इसी समृद्धशाली रुप को देखकर ऋषि मनु ने लिखा है-वह देश, जिसमें नारी शिक्षित होती है तथा उसका सम्मान होता है, अवश्य की समृद्धशाली होगा। टैगोर ने भी कुछ इसी प्रकार के शब्दों का व्यवहार किया है - "गृह की समस्त मर्यादा और वैभव का आधार नारी के कंधो पर है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि गृह विज्ञान घर से सम्बन्धित घरेलू बातों की जानकारी करता है, जिसके आधार पर हम कुशल गृहिणी के आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण कर अपने पारिवारिक जीवन को सुखी तथा कम आर्थिक श्रोत होने पर भी समुन्नत बना सकते हैं। गृह विज्ञान के अन्तर्गत उन सभी कारकों को सम्मिलित किया गया है जो गृह जीवन के आराम तथा कुशलता को प्रभावित करते हैं। यद्यपि यह दूसरी बात है कि प्राचीन समय से ही नारी शिक्षा की आवश्यकता को समझकर उस ओर अधिक ध्यान दिया जाता रहा है, परन्तु नारी की शिक्षा के प्रसार के साथ यह महत्वपुर्ण प्रश्न जुड़ा है कि नारी को क्या पढ़ाया जाए? किस विषय की शिक्षा उन्हें दी जाए? कौन सा ज्ञान आधुनिक समय में महिला के लिए उपयुक्त होगा?

गृह विज्ञान शिक्षण की आवश्यकता

वर्तमान बदलते परिवेश में संस्था के रूप में गृह का स्वरूप बदलता जा रहा है। आज के व्यावसायिक तथा औद्योगिक-तकनीकी युग में संयुक्त परिवार प्रणाली का धीरे-धीरे लोप होता जा रहा है। पारिवारिक जीवन बदलता जा रहा है तथा सामाजिक जीवन के नवीन आयाम विकसित हो रहे हैं। आज हर जगह एकल परिवार को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे जहाँ एक ओर व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा मिल रहा है वहीं सामुदायिक सुख-शान्ति और निर्वहन का ह्रास हो रहा है। आज महिलायें पहले की अपेक्षा अधिक उद्यमी बनती जा रही है। पहले की तुलना में अधिक महिलायें कुछ न कुछ व्यवसाय हेतु आगे आ रही है। इस प्रकार से शीघ्र विकसित अर्थव्यवस्था तथा औधोगिक युग में गृह अनेक प्रकार से प्रभावित हो रहा है। यदि महिलाओं को वर्तमान समय की जरूरतों की पूर्ति करना है तथा कृषि व उद्योग की पृष्ठभूमि में प्राचीन परम्पराओं की रक्षा भी करना है तो हमे उसी ढंग से नारी को शिक्षा देना होगा। इस दिशा में गृह विज्ञान का अध्ययन एक आवश्यक कदम होगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि गृह विज्ञान शिक्षण में नवीन प्रेरणा व आदर्शों को रखकर हम इस विषय में नवीन जीवन का संचार करें। यह तभी संभव है जब उपरोक्त सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर गृह विज्ञान के अर्थ, उपयोगिता तथा महत्व को समझा जायेगा और उसी के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जायेगी।

गृह विज्ञान की प्रकृति

वर्तमान विकसित सभ्यता यदि एक और मनुष्य के लिए नवीनता की रुपरेखा बना रही है तो दूसरी ओ वह उसके जीवन में एक प्रश्नचिह्न बनकर भी खड़ी हो गयी है। अतएव आज का मानव पुनः उस जीवन की खोज में है जो इस भौतिकता के वैभव के बीच में इसे सकून और शांति प्रदान कर सके। गृह विज्ञान इस बात का साक्षी है कि कोई भी राष्ट्र तभी आगे बढ़ता है जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक सुखी व शांतिपूर्ण जीवन यापन कर पाता है इस शांतिमय जीवन का अंकुरण गृह में होता है। सुखी गृह सफल जीवन की कुंजी है।

घर एक ऐसा संसार है जहाँ बच्चे बड़े होकर सुयोग्य नागरिक बनते हैं। उनके चरित्र का निर्माण होता है। उनमें प्रेम, सहयोग, स्नेह, त्याग इत्यादि गुणों का विकास होता है। बच्चों के शील - संस्कार घर में ही बनते हैं। भारतीय संस्कृति में वंश, परिवार तथा परिवार में गृहिणी का स्थान सर्वोपरी है। गृहिणी बच्चों का पालन - पोषण करती है। अतएव बच्चों के विकास में उनका योगदान सर्व प्रमुख हैं। गृहिणी घर की प्राणवायु है। परिवार की धुरी है अतएव उसका गृहिणी को शिक्षित होना आवश्यक है। एक चीनी कहावत है कि जब आप एक पुरुष को शिक्षित करते है ता एक व्यक्ति शिक्षित होता है किन्तु जब आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं तो पूरा परिवार एवं उसका परिवेश शिक्षित होता है। इसलिए घर में, समाज में स्त्री शिक्षा का महत्व हमारे पूर्वज भी मानते थे। यही कारण है कि प्राचीन युग में बाल्यकाल से ही बालिकाओं की गृह संचालन से सम्बन्धित शिक्षा दीक्षा दी जाती थी। एक मकान को घर बनाने में स्त्री की भूमिका प्रमुख है।

प्राचीन युग में गृह विज्ञान को एक कला के रुप में माना गया है। मनु ने लिखा है कि घर बसाने के लिए एक कन्या को आरम्भ में ही 64 कलाओं से परिपूर्ण होना आवश्यक है । उसे बाल्यकाल से पाक कला-सूची कला, अतिथि सत्कार, बच्चों का पालन-पोषण, घर के सदस्यों की देखभाल, नृत्य संगीत, साहित्य, धर्म इत्यादि विषयक ज्ञान देना चाहिए तभी वह विवाह योग्य तथा घर बसाने योग्य हो सकती है। इस तथ्य से प्रमाणित है कि गृहस्थी सम्बन्धी गृह विज्ञान की शिक्षा का आरंभिक काल से ही स्त्री शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान हैं।

गृह का स्वरुप विभिन्न देशों तथा विभिन्न काल में और विभिन्न मानव हृदय में अलग-अलग है। उदाहरण के लिए एक भारतीय गृह पाश्चात्य गृह से भिन्न और अलग होता है और आधुनिक गृह प्राचीन गृहों से भिन्न इतना ही नहीं एक ही देश में विभिन्न देशवासियों एवं जातियों में गृह की कल्पना पृथक - पृथक है। यदि गौर से देखा जाए तो वैशाली गृह पंजाबी गृह से भिन्न है, हिन्दू गृह, ईस्लाम गृह से भिन्न है, परन्तु इसमें विशेष बात यह है कि इस विभिन्नता में भी सम्पूर्ण गृहों के उद्देश्य लगभग समान है। संकल्पना भी परिवर्तित होती गयी। लेकिन इस चिर स्थायी संस्था का

स्थायी स्वरुप और उसके सदस्यों पर पड़ने वाला प्रभाव पविर्तित नहीं हुए।

भारतीय गृह उसके सांस्कृतिक दृष्टिकोण का परिणाम है। सुखी व स्वस्थ गृह का निर्माण भारतीय विचार-धारा में निहित है। फलस्वरुप भारत वर्ष में गृह अपने भौतिक अस्तित्व से परे नैतिक और आध्यात्मिक आधार भी रखता है। हिन्दू समाज की आश्रम व्यवस्था जो मानव जीवन को चार वैज्ञानिक अवस्थाओं में बाँटता हैं उसमें गृहस्थ आश्रम सर्वोपरि है। इससे यह स्पष्ट है कि वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक भारतीय संस्कृति के उन्न्यन में गृह का एक बड़ा विशिष्ट स्थान रहा है। भारतीय पृष्ठभूमि में गृह और नारी एक साथ जुड़े हुए है। वास्तव में गृह नारी का दूसरा नाम है जहां वह पत्नी और माता के रुप में अपने उत्तदायित्वों का निर्वहन करते हुए नारीत्व को भारतीय समाज में सदैव के लिए विशिष्ट स्थान दिलाने का काम करती रही है।

गृह विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र

वर्तमान वैज्ञानिक युग के विकासशील समाज हेतु एक ऐसे शिक्षण विषय की आवश्यकता है जो स्वंय भी निरंतर गतिशील एवं भविष्यवादी हो। गृह विज्ञान एक ऐसा ही व्यापक विषय है जो मानव जीवन के हर क्षेत्र तथा पक्ष से सम्बन्धित है। सही अर्थो में गृहविज्ञान वह कला है जो परिवार को वैज्ञानिक ढंग से योजनाबद्ध रुप से संचालित करने के लिए प्रेरणा प्रदान करता हैं।

जीवाणु विज्ञान से वह दूध से दही का बनाना, आचार सिरके एवं पनीर निर्माण में जीवाणुओं का योगदान भली भॉती समझती है। घातक जीवाणुओं से भोजन की सुरक्षा किस प्रकार की जा सकती है, इसका ज्ञान भी उसे रहता है। भौतिक विज्ञान उसे घर के मशीनी एवं विद्युत उपकरणों के संचालन एवं देखभल करने में सहायक होता है। इसी प्रकार अर्थशास्त्र का ज्ञान घरेलू वस्तुओं की आवश्यकताएं, खरीददारी, बजट बनाना, घरेलू आय-व्यय का हिसाब रखना बचत की पूँजी का सही निवेश करना सिखाता है तो मनोविज्ञान, समाजशास्त्र का ज्ञान घर परिवार के सदस्यों को समझना, उसके साथ सामंजस्य स्थापित करना आदि सिखाता है। अन्य विषय यथा भाषा साहित्य, कला, प्राचीन काल का गृह विज्ञान उसे देश की साहित्य संस्कृति को समझने में सहायक होते है। इन विषयों का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात गृह विज्ञान के मूल विषयों को समझने में बालिकाओं को सरलता होती है।

जहाँ तक गृह विज्ञान के क्षेत्र का प्रश्न है? तो गृह विज्ञान का क्षेत्र इतना व्यापक है कि मानव का सम्पूर्ण जीवन इसके क्षेत्र के अन्तर्गत आ जाता है। यथार्थ में यह अध्ययन का वह क्षेत्र है जहॉ पर सभी प्रकार के विषयों का गृह विज्ञान के साथ सन्निवेशन हो जाता है। गृह विज्ञान विषय का लक्ष्य व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार करना है ताकि उनका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उतम रहें, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्तम गृह तथा सामुदायिक सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। परिवार के प्रसाधनों का अधिकाधिक उपयोग करने के लिए रचनात्मकता का विकास हो तथा पारिवारिक जीवन के कलात्मक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों में अभिवृद्धि करके अधिक संतोष प्रदान कर सकें इन वृहत् लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सभी क्रिया कलाप गृह विज्ञान के अन्तर्गत आते है।

गृह विज्ञान के क्षेत्रान्तर्गत निम्न बातों का अध्ययन किया जाता है-

शरीर क्रिया विज्ञान

इसके अन्तर्गत मानव शरीर, अस्थि संस्थान, पाचन संस्थान, रक्त संचालन संस्थान, श्वसन संस्थान एवं उत्सर्जी संस्थान आदि का अध्ययन किया जाता है।

स्वास्थ्य विज्ञान

इसके अन्तर्गत प्राणमूलक वायु कुड़े- कर्कट का उत्सर्जन, षुद्ध जल, वैयक्तिक स्वास्थ्य, भोजन, व्यायाम, विश्राम, निद्रा, मनोरंजन, कुछ सामान्य रोग निस्संक्रमण, मल- मूत्र का उत्सर्जन आदि बातें आती हैं।

आहार एवं पोषण विज्ञान

मानव की मूल-भूत आवश्यकताएँ भोजन, वस्त्र एवं आवास है इनसे सम्बन्धित विषयों के गहन अध्ययन के क्रम में गृह विज्ञान के अन्तर्गत आहार एवं पोषण विज्ञान महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चूँकि आहार का स्वास्थ्य से घनिष्ट सम्बन्ध है। आहार एवं पोषण विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर छात्राएँ अपने परिवार के सदस्यों हेतु उत्तम आहार का आयोजन कर सकती है, जो सभी को स्वस्थ्य रखने में सहायता प्रदान करती है। भारत में व्यापत कुपोषण का एक मुख्य कारण गरीबी एवं दूसरा भोजन सम्बन्धी मिथ्या धारणायें है। गृह विज्ञान की छात्रायें कम आय में विवेकपूर्ण ढंग से संतुलित एवं पौष्टिक भोजन प्राप्त करना एवं भोजन भ्रांतियों को दूर करके कुपोषण से बचाव कर सकती है। इसके

अलावा वे भोज्य पदार्थों को जैसे - जैली , आचार, मुरब्बे, पापड़, बड़ी इत्यादि के रुप में संरक्षित करना भी सीखती हैं। विशेष अवसरों हेतु औपचारिक अथवा अनौपचारिक पार्टियों का आयोजन, विभिन्न शैलियों में भोजन बनाना तथा भोजन मेज सज्जा करना, भोजन सम्बन्धी शिष्टाचार आदि का ज्ञान भी प्राप्त करती है।

गृह प्रबन्ध

इसके अन्तर्गत गृह का चयन, कमरों का वर्गीकरण, उपकरण और गृह अलंकरण, गृह के कमरों में सामनों का रख - रखाव, गृहिणी के कर्तव्य, घर और गृह उसके परिवेश की सफाई, पारिवारिक आय- व्यय तथा बजट का निर्माण, घर के समानों की सुरक्षा तथा सफाई आदि चीजें आती हैं। घर में स्वच्छ वातावरण भी गृहिणी के लक्षणों को दर्शाता हैं। गृह प्रबन्ध की कुशलता से स्त्रियों की कुशलता का पता स्वतः चल जाता है।

परिवारिक संसाधनों का व्यवस्थान

गृह व्यवस्था विषय की शिक्षा भावी पीढ़ी को बताना, परिवारिक आय में सीमित संसाधनों से गृह की उत्तम व्यवस्था करना, घर के समानों का सदुपयोग करना, घर के आवश्यक वस्तुओं का सदुपयोग करके घर को आर्कषक बनाना, आये अतिथियों का उत्तमता के साथ स्वागत करना, आधुनिक उपकरणों का प्रयोग कर श्रम का बचत करना, समय का बचत करना तथा खाली समय का सदुपयोग करना आदि बातें इसके अन्तर्गत आती हैं। यह विषय मानवीय संसाधनों का विचार पूर्ण उपयोग तथा परिवार के सदस्यों के मध्य व्यक्तिगत रुचि, आयु, व्यवसाय, स्वास्थ्य को देखते हुए कार्यों का वितरण करना सिखाती है। परिवार के लोग मिल जुलकर प्रसन्नता पूर्वक कार्य कर सकें, इसके लिए गृहिणी को मानव मनोविज्ञान एवं मानव सम्बन्धों को समझने की जरुरत पड़ती है। ये विषय उन्हीं चीजो की व्यावहारगत जानकारी देती है जिसके कारण गृहिणी का घर स्वीट होम बन जाता है जहॉ परिवार के सभी सदस्यों को सुख -षांति तथा सकून मिलता हैं।

वस्त्र विज्ञान एवं परिधान

जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक मानव का सम्बन्ध वस्त्रों से रहता है। हम वस्त्र पहनते है, ओढ़ते- बिछाते हैं। वस्त्र सर्दी, धूप, आग, वर्षा एवं संक्रमण से हमारी रक्षा करते है। आकर्षक रंगीन परदों, सोफा कवर, चादरों, तकिया- खोलों से घर सुन्दर एवं आकर्षक बनाते हैं। आधुनिक जीवन का हर कोना वस्त्र से आच्छादित है।गृहिणी को अपने परिवार के सदस्यों के लिए वस्त्रों का चयन व खरीददारी करनी पड़ती हैं। आधुनिक फैशन के अनुरुप वस्त्र स्वंय सिलती है, अथवा सिलवाती है। परम्परागत वस्त्रों का गृह विज्ञान, वस्त्रों का सामाजिक, मनोविज्ञान महत्व, परिधानों का अवसरोचित चयन एवं परिधान सम्बन्धी शिष्टाचार इन सभी तथ्यों का ज्ञान अर्जित कर एक गृह वैज्ञानिक गहन आत्म विश्वास के साथ वस्त्रों की दुनिया में प्रवेश कर सकती है। इस ज्ञान से स्त्रियॉ न केवल घर के वस्त्र परिधानों का प्रबन्ध देखती है, अपितु टेक्सटाइल एवड इन्डस्ट्री से जुड़कर इस क्षेत्र का कोई भी कार्य का संचालन सफलतापूर्वक कर सकती है।

शिशुओं की देख-रेख

घर से बच्चों का सम्बन्ध अन्योन्याश्रय है। जहाँ घर है वहॉ बच्चे होते हैं। बच्चे के बगैर घर सूना सूना लगता हैं। बच्चों की किलकारियों से घर का कोना कोना आच्छादित होता है। यही कारण है कि गृह विज्ञान के अन्तर्गत बच्चों की देख-रेख से सम्बन्धित बातों को विशेष रुप से जोड़ा गया है। इसके अन्तर्गत शिशुओं की देखरेख, सुरक्षा, मिश्रित आहार, प्राथमिक टीके, बच्चों के सामान्य रोग, बच्चों के खेल, मनोरंजन से सम्बन्धित बातों को रखा गया हैं। कुशल गृहिणी ही बच्चों का सही ढंग से देख रेख लालन पालन कर सकती है। बच्चों की खुशियों से घर स्वर्ग बन जाता है। बाल विकास के अन्तर्गत शिशु जन्म प्रक्रिया, प्रसव पूर्व एवं प्रसवोपरान्त स्त्री की देखभाल, शिशु का आहार, वस्त्र, पालन पोषण, शिशुका शारीरिक मानसिक संवेगात्मक विकास, बाल मनोविज्ञान के विभिन्न पक्ष परिवार के सदस्यों के साथ बच्चों का सम्बन्ध उनकी समस्यायें, बाल अपराध के कारण आदि का गहन अध्ययन किया जाता है। बच्चों के जीवन में खेल का महत्व, खेल के प्रकार, नर्सरी स्कूल का महत्व, बच्चों का निमित शिक्षण सामग्री तैयार करना इत्यादि विविध पक्षों को भी इसी विषय के साथ जोड़ा गया है ताकि शिशुओं की देख रेख और बाल विकास सही प्रकार से गृहणियों कर सके।

गृह विज्ञान शिक्षा का प्रसार

गृह विज्ञान का शिक्षण केवल इस विषय का अध्ययन करने वाली छात्राओं के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक परिवार के लिए आवश्यक है। हर स्त्री के लिए यह संभव नहीं है कि वह स्कूल, कॉलेज या शिक्षण संस्थान में जाकर इस विषय की औपचारिक शिक्षा प्राप्त कर सकें क्योंकि यह अत्यन्त जरुरी दीर्घायु, हृहद दीर्घावधि की महँगी शिक्षा है। अतएव गृह विज्ञान स्वंय उनके दरवाजे तक पहुँच सके, यह दृष्टिकोण समक्ष रखकर गृह विज्ञान शिक्षा का प्रसार करना अत्यन्त जरुरी है। इसके अन्तर्गत घर घर जाकर सभी लोगों तथा

गृहणियों से सम्पर्क स्थापित पर प्रभाव पूर्ण ढंग से गृह विज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान कम से कम समय में उन तक अधिक से अधिक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए।

गृह विज्ञान शिक्षण का महत्व

नवोदित भारतीय समाज में शिक्षा के प्रसार के फलस्वरूप स्त्रियों में नई जागृति आई है। अब लोग महसूस करने लगे है कि पारिवारिक जीवन को सुखी बनाने के लिए गृहणियों को गृहकला में निपुण होना चाहिए। वर्तमान भारत में अन्य देशों के समान आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के कारण स्त्रियों को घर से बाहर दूसरे क्षेत्रों में आने के लिए निरंतर पुकार रही है। क्योंकि गृह विज्ञान की शिक्षा नारी को पूर्णता प्रदान करती है। इस ज्ञान के द्वारा दैनिक जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान होता है जिससे पारिवारिक जीवन में सुख तथा संतोष व्याप्त होता है। गृह विज्ञान विशेषज्ञों के कथनानुसार यह शिक्षा नारी मनोविज्ञान की समस्त अभिवृत्तियों की संतुष्टि करती है। इस शिक्षा की सहायता से मूल प्रवृत्तियां उपयोगी रचनात्मक कार्यो में लगने के कारण आत्मसंतुष्टि प्रदान करती है। नारी स्वयं में एक गरिमा का अनुभव करती है जिस कारण उसमे सौम्यता, सरलता, सहजता, विनयशीलता जैसे सांस्कृतिक गुणों का विकास होता है। नारी के सर्वांगीण एवं संतुलित विकास में गृह विज्ञान की शिक्षा इतनी उपयोगी है कि समस्त नारी जाति को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से इससे जुड़ना पड़ता है। पारिवारिक जीवन की स्थितियों में सुधार लाने के लिए तथा घर को सुखी सम्पन्न बनाने के लिए गृह विज्ञान की शिक्षा आवश्यक है। माध्यमिक शिक्षा आयोग के सुझावों के आलोक में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर गृह विज्ञान की शिक्षा पर विशेष जोर दिये जाने पर बल दिया है।

गृह विज्ञान की षिक्षा के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं में प्रयुक्त किया जा सकता है-

1. गृह विज्ञान की शिक्षा प्राप्त गृहिणी घर के सभी कार्यों को अधिक सुलझे हुए वैज्ञानिक तरीके से पूर्ण आत्मविश्वास के साथ सम्पादित करती है।

2. गृह विज्ञान की शिक्षा द्वारा गृहिणी में श्रम के प्रति सम्मान की भावना उपजती है। किसी कार्य को करने में वह शर्म या झिझक नहीं, अपितु आत्मगौरव समझती है तथा उसे अत्यन्त कुशलतापूर्वक करती है।

3. गृह विज्ञान की कार्य सरलीकरण को अपनाकर गृहिणी नवीनतम उपकरणों का उपयोग कर श्रम, समय तथा धन की बचत कर सकती है।

4. कार्य कुशलता के द्वारा अत्यन्त समय में गृहकार्य करके अपने बचे हुए समय में रचनात्मक व्यवसाय अथवा नौकरी करके अर्थोपार्जन द्वारा परिवार के सुखों में वृद्धि कर सकती हैं, तथा जीवन स्तर को ऊँचा उठा सकती है।

5. गृह विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर गृहिणी अपने परिवार के सभी सदस्यों को सीमित बजट में उत्तम पोषण प्रदान कर उन्हें स्वस्थ्य रखने में योगदान दे सकती है।

6. गृह विज्ञान के अन्तर्गत मनोविज्ञान का अध्ययन पर परिवार में उचित एवं परस्पर एक दूसरे की समस्याओं को समझकर सुलझा सकती है।

7. गृह विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर गृहिणी जीवन के प्रति लापरवाह न होकर अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहती है।

8. गृह विज्ञान की शिक्षा सीमित साधनों में अधिकतम संतोष प्राप्त करने का कौशल प्रदान करती है। इन गुणों को प्राप्त कर गृहणियों अपने परिवार के सुख शांति में वृद्धि कर सकती है।

9. गृह विज्ञान में मिल बाँट कर कार्य करने की कला का विशेष ध्यान दिया जाता है। इस विधि को परिवार में लागू कर गृहिणी परिवार के सदस्यो में सहयोग, अपनापन, सहकारिता एवं त्याग की भावनाओं को विकसित कर सकती हैं। इससे परिवार के साथ समाज का अन्ततः राष्ट्र का कल्याण होता है।

10. गृह विज्ञान की शिक्षा स्त्रियों को रोजगार के नए अवसर प्रदान करती हैं। यह शिक्षा प्राप्त करके पोषण विधि, आहार विधि, शिक्षण विधि, पत्रकारिता विधि, वाचन विधि, डिजाइन विधि आदि को अपना कर गृहणियों अपने आय में वृद्धि कर सकती है।

11. इस विषय के शिक्षण के द्वारा गृहिणी सामान्य बीमारियॉ के उपचार तथा शिशु की देख रेख आदि बातों से परिचित हो सकती है।

12. गृह विज्ञान की शिक्षा सौन्दर्यात्मक प्रवृति के विकास में भी अधिक सहायक है।

13. इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के हस्तकला, सिलाई, बुनाई, कटाई आदि का ज्ञान भी प्राप्त कर गृहणियों कलात्मकता को अपना सकती है।

14. इस शिक्षा के द्वारा गृहणियों मितव्ययिता की शिक्षा प्राप्त कर व्यवहार कुशल बन सकती है।

15. छात्राओं में आदर्श गहिणी के गुणों का समावेश करने की दृष्टि से भी यह विषय अत्यन्त उपयोगी है।

गृह विज्ञान अध्ययन की उपयोगिता

बालिकाओं के लिए विशेषकर गृहणियों के लिए गृह विज्ञान एक उपयोगी विषय हैं। इससे समाज सेवा की भावनाओं का विकास होता हैं।

गृह विज्ञान अध्ययन से लाभ-

1. गृह विज्ञान शिक्षण में छात्राओं को पोषण, सवास्थ्य सफाई शिशु कल्याण, गृह परिचर्चा आदि का वैज्ञानिक आदान प्रदान किया जाता है। इससे अन्य उपयोगी ज्ञान वृद्धि किया जाता है। तथा वह अपने उत्तरदायित्वों को अच्छी प्रकार पूरा करने लगती हैं।

2. नारी के लिए गृह विज्ञान शिक्षण का व्यावहारिक महत्व भी है। विषय का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् विभिन्न प्रकार के व्यावसाय अपना सकती है। जैसे- बालवारी शिक्षिका, समाज सेविका, प्रारंभिक चिकित्सा, निर्देशिका, शोधकर्ता आदि के कार्य अच्छी तरह कर सकती है।

3. स्त्री भावी पीढ़ी की निर्मात्री होती हैं। शिशु के लालन पालन तथा पोषण का दायित्व उसी का होता है। प्रारंभ में बालक का विकास किस प्रकार होगा वही प्रायः इसके भावी विकास के क्रम को निर्धारित करती है। गृहिणी को शिशुपालन तथा शिशु कल्याण सम्बन्धी सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक बातों से परिचित होना चाहिए। गृह विज्ञान के अन्तर्गत इनके सम्बन्ध में प्रगति ज्ञान दिया जाता हैं।

4. गृह विज्ञान की शिक्षा द्वारा गृहिणी को मितव्ययिता की शिक्षा मिलती हैं। पोषण के विज्ञान के अभाव में जिन खाद्य वस्तुओं के कुछ भाग को अनुपयुक्त एवं व्यर्थ समझा जाता था अब उनका अधिकतम उपयोग करके धन की बचत की जा सकती है। सब्जी और फल को छीलकर उनके छिलके को फेंकना, सब्जी तथा पानी को फेंकना आदि अपव्यय क्रियाओं को कोई भी गृह विज्ञान की छात्रा सहन नहीं कर सकती। वह इनका उपयोग पोषण आहार तैयार करने में करती है।

5. छूत तथा अन्य सामान्य बीमारियों के सम्बन्ध में छात्रायें पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लेती है। घर में जलने, कटने आदि की दुर्घटना होने पर क्या प्राथमिक उपचार किया जाये इसका प्राथमिक ज्ञान उन्हें गृह विज्ञान में दिया जाता हैं। वे रोगी की उपयुक्त सेवा सुश्रुषा भली प्रकार कर सकती है।

6. छात्राओं में आदर्श गृहिणियों के गुणों का समावेश करने की दृष्टि से यह विषय नितान्त जरुरी है। आज स्त्री का कार्य क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है।

7. गृह विज्ञान शिक्षा का महत्व सौन्दर्यात्मक प्रवृति के विकास की दृष्टि से भी अत्यधिक है। छात्राओं को शुरु से ही सुन्दर ढंग से विभिन्न प्रकार के आहार तैयार करने और परोसने का ज्ञान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की सिलाई, कढाई, बुनाई भी सिखाई जाती है। घर को सजाने, फर्निचर को कलात्मक ढंग से रखने, रसोई घर की सुव्यवस्था आदि बातें घर में सौन्दर्यात्मक वातावरण का निर्माण करती है। इसका गृह के प्रत्येक सदस्य पर स्वस्थ्य और वास्तविक प्रभाव पड़ता है।

8. प्रत्येक राष्ट्र अपेक्षा करता है कि उसके नागरिक स्वस्थ्य व उत्कृष्ट मूल्यों एवं आदर्शों के प्रेति श्रद्धा एवं विश्वास के भाव निर्मित करे।

गृह विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य

होम इकोनोमिक्स एशोसियेशन अमेरिका 1959 ने इसके उद्देश्य के विषय में निम्न बाते कही हैं – “हम विश्वास करते हैं कि गृह विज्ञान की सबसे स्पष्ट एवं नवीन दिशा यह होगी कि वह बालिकाओं में उन मौखिक गुणों को विकसित करने में अपना योगदान दें जो उनके घरेलू जीवन हेतु प्रभावी हो तथा जो वैयक्तिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों में भिन्नता होते

हुए भी उनके व्यक्तिगत और परिवार के जीवन में सफलता प्रदान कर सके।"

बी.डी. भाटिया के अनुसार - "उद्देश्यों के समाज में शिक्षक उस नाविक के समान है जो कि अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकता और बालक उस पतवार विहिन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी तट से जा लगेगी।"

जॉन ड्यूवी के अनुसार- "उद्देश्य पूर्व नियोजन लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है या क्रिया करने के लिए अभिप्रेरित हैं।"

रिवलिन के अनुसार - "शिक्षा एक सप्रयोजन तथा नैतिक क्रिया है, अतएव यह कल्पना ही नहीं की जा सकती कि यह उद्देश्यहीन है।"

पीगू के अनुसार- "शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में व्यावहारिक जीवन की समस्याओं के समाधान करने की क्षमता का विकास करना है।"

बाईनिंग एवं बाईनिंग के अनुसार - "विषय के सिद्धान्तों का निरीक्षण, सामयिक रीतियों के अनुसार शिक्षण तथा सामाजिक आर्थिक वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने की सूक्ष्मता उत्पन्न करना ही इसका उद्देश्य है।"

एम. पी. मुफात के अनुसार- "जीविकोपार्जन हेतु प्रशिक्षण देना, कुशल उपभोक्ता बनाना, पारिवारिक आय में वृद्धि करना, बजट के व्यावहारिक महत्व को समझना तथा छात्रों में रहन सहन के स्तर को उच्च बनाने की क्षमता विकसित करना ही इसका उद्देश्य है।"

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान ने भी इसके उद्देश्य को निम्न प्रकार अभिभाषित किया है – "जीविकोपार्जन हेतु शिक्षण देना, कुशल उपभोक्ता तैयार करना, पारिवारिक आय में वृद्धि करना, बजट के व्यवहारिक महत्व को समझना तथा बालिकाओं में रहन-सहन के स्तर को उच्च बनाने की क्षमता विकसित करना ही इसका प्रमुख उद्देश्य है।"

ओलाइव ए.हौल तथा बीटराइस ने गृह विज्ञान का उद्देश्य निम्न प्रकार व्यक्त किया है:-

- परिवार के सदस्यों की बुद्धि एवं विकास हेतु वास्तविक वातावरण का निर्माण करना।
- बालिकाओं में परिवार एवं समाज के मध्य स्वस्थ एवं मधुर सम्बन्धों को स्थापित करने की क्षमता विकसित करना।
- आर्थिक संसाधनों का विवेकीकरण के साथ प्रयोग करना।
- गृह सम्बन्धी समस्त कार्यो को सफलतापूर्वक सम्पन्न करना।
- अवकाश के क्षणों का उपयोग रचनात्मक एवं कलात्मक कार्यो के लिए करना।
- परिवार के सभी सदस्यों सहित बच्चों को देखभाल के लिए सही तरीकों को अपनाना।
- सामाजिक कार्यों, सद्भाव, आपसी सहयोग एवं पारस्परिक सोच की भावनाओं का कुशलतापूर्वक विकास करना।
- आर्थिक सुरक्षा हेतु दीर्घकालिक लक्ष्यों का निर्धारण करना तथा उसे प्राप्त करने का यत्न करना।

लेडी इर्विन कॉलेज दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में गृह विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों को निम्न प्रकार से निर्धारित किया गया था:-

- बालिकाओं के स्वरूप एवं बहुमुखी-प्रतिभा एवं व्यक्तित्व का विकास करना।
- परिवार के विकास हेतु बालिकाओं में विभिन्न प्रकार के कार्य कौशल एवं दक्षताओं का विकास करना।
- बालिकाओं में मानव जीवन के यर्थाथ अर्थ को समझने की क्षमता विकसित करना तथा व्यवस्थित नैतिक जीवन के महत्व से परिचित कराना।
- उन्हे समाज में प्रचलित परम्पराओं, रीति रिवाजों एवं संस्कृति से परिचित कराते हुए उनका मूल्यांकन करने हेतु प्रोत्साहित करना।
- गृह विज्ञान पाठ्यवस्तु का प्रमुख उद्देश्य बालिकाओं की प्रकृति प्रदत्त शक्तियों एवं संभावनाओं का अधिकतम विकास करने में सहायता देना।

माध्यमिक विद्यालय स्तर पर गृह विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य:-

- गृह व्यवस्था से सम्बन्धित समस्त कौशलों को विकसित करना।
- बालिकाओं में उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।
- सामाजिक, पारिवारिक एवं नैतिक गुणों का विकास करना।
- आत्मिक संतोष की भावना का विकास करना।
- बालिकाओं मे कलात्मक अभिरूचि का विकास करना।
- जीवन रक्षा हेतु आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करना।
- वर्तमान सामाजिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश की जानकारी रखना।
- पारिवारिक बजट तैयार करना।
- आदर्श नागरिक तथा पारिवारिक सदस्यों के गुणों का विकास करना।
- आपसी सौहार्द का वातावरण तैयार करना।
- अवकाश के क्षणों का सदुपयोग करना।
- सीमित संसाधन में व्यवस्थित व संतुलित गृह व्यवस्था करना।
- गृह सज्जा, सौन्दयीकरण, बागवानी आदि करना।

उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर गृह विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य:-

- गृह व्यवस्था सम्बन्धी कौशलों का विकास करना।
- उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।
- सामाजिक एवं नैतिक गुणों का विकास करना।
- संतोष की भावना का विकास करना।
- कलात्मक अभिवृत्ति का विकास करना।
- स्वास्थ्य सम्बन्धी अच्छी आदतों का निर्माण करना।
- आत्मनिर्भरता-आत्मविश्वास की भावना का विकास करना।
- अवकाश के क्षणों का सदुपयोग करना।
- सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- व्यावसायिक क्षमता का विकास करना।
- परिवार-गृह तथा समाज के मध्य समायोजन करना।
- परिवारजनों में मनोवैज्ञानिक क्षमताओं का विकास करना।
- मानसिक विकास हेतु ज्ञान अर्जित करना।
- अनुशासन एवं समय की महत्ता को पहचनाना।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं चिन्तन उत्पन्न करना।
- सार्वजनिक हित की भावना का विकास करना।
- सहकारिता की भावना का विकास करना।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि गृह विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं व्यापक है। इन उद्देश्यों को अच्छे शिक्षण के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

सफल गृह विज्ञान शिक्षण हेतु अध्यापिका को यथा अवसर अध्यापन की साधारण युक्तियां का प्रयोग करना चाहिए, जैसे-प्रश्नोत्तर, विवरण, व्याख्या, प्रदर्शन, तुलना, विश्लेषण, उद्घाटन, अभिनय, गृह कार्य आदि। गृह विज्ञान शिक्षण में प्रश्नोत्तर प्रणाली एवं कार्यप्रणाली का महत्व है। कभी-कभी पूरे पाठ का विकास प्रश्नोत्तर प्रणाली के आधार पर किया जा सकता है। प्रश्नोत्तर प्रणाली द्वारा ही बालिकाओं के समक्ष ऐसी समस्या रखी जा सकती है, जिनके उत्तर देने में छात्रायें कल्पना एवं तर्कशक्ति का उपयोग कर सकेंगी। प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों का ध्यान आवश्यक तथ्यों की ओर आकर्षित किया जा सकता है तथा विवरण एवं सरल कथन द्वारा किसी वस्तु की जानकारी दी जा सकती है। पाठ्यक्रम की कठिन वस्तुओं को जिसे विद्यार्थी सरलता से ग्रहण नहीं कर पाते हैं, उदाहरण द्वारा व्याख्या करके समझाया जा सकता है। तुलना का भी शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान है। विश्लेषण, उद्घाटन, अभिनय एवं गृहकार्य के द्वारा भी

गृहविज्ञान शिक्षण को सरल तथा आकर्षक बनाया जा सकता है।

गृह विज्ञान शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी सहायता से गृह विज्ञान शिक्षण में वास्तविकता तथा सजीवता आती है एवं विद्यार्थियों की रूचि विषय में उत्पन्न होती है। सहायक सामग्री द्वारा ही पाठ को रोचक तथा सरल बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से ही विषय वस्तु को आकर्षक बनाकर सरलतापूर्वक समझाया जा सकता है जिसके फलस्वरूप गृह विज्ञान शिक्षण अधिक सजीव एवं स्पष्ट बन सकता है। अवधान एवं रूचि को स्थिर रखने में सहायक सामग्रियों का पर्याप्त योगदान है।

निष्कर्ष

भारत शहरों तथा गाँवों का देश है। जहाँ अब 40% लोग शहरों में निवास करते हैं वहीं 60% लोग गाँवों में निवास करते हैं। शिक्षा की दृष्टि से शहरों में निवास करने वाले लोगों के बच्चे शहरी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं तो गाँव में रहने वाले लोगों के बच्चे ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययरनत होते हैं। सुविधा की दृष्टि से शहरी विद्यालयों के संसाधनों की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों की स्थिति अच्छी नहीं होती। इसका प्रभाव विद्यार्थियों की निष्पित्ति पर पड़ता है। शहरों के बच्चे ट्यूशन, कोचिंग इत्यादि के द्वारा विद्यालयों में शिक्षा के समय जिन चीजों को नहीं समझ पाते हैं, उनको घर पर समझ लेते हैं जबकि गाँव के बच्चे विद्यालयों की पढ़ाई पर ही पूर्णतः आश्रित होते हैं। अतः इस अध्ययन हेतु ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को चुना गया है। अतः आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों के गृह विज्ञान के वास्तविक ज्ञान में बृद्धि एवं ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु वर्तमान स्थिति का पता लगाया जाये, ग्रामीण एवं शहरी स्तर के गृह विज्ञान शिक्षण व्यवस्था का वास्तविक स्थिति का जायजा लिया जाये। इसके बाद ही गृह विज्ञान शिक्षण को उन्नत बनाने हेतु कोई उपाय खोजा जा सकता है। किसी भी समस्या का उचित समाधान, समस्या की वर्तमान स्थिति का पता लगाने के पश्चात् ही किया जा सकता है। अतः ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर गृह विज्ञान शिक्षण को समुन्नत बनाने हेतु इस अध्ययन की महत्ती आवश्यकता है।

संदर्भ-

1. डॉ. शकुन्तला - गृह विज्ञान शिक्षण, कविता प्रकाशन, जयपुर
2. शर्मा डॉ. पदमा - गृह विज्ञान शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
3. शैरी डॉ.जी.पी. - गृह विज्ञान शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. महतो श्रीमती रानी -गृह विज्ञान शिक्षण, सरस्वती प्रकाशन, अलवर
5. राय पी.एन., 1981 - अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
6. श्रीवास्तव, एस. एस., 1978 - सूक्ष्म शिक्षण, भारत भारती प्रकाशन, वाराणसी
7. सिंह टी., 1984 - शक्षण एवं शिक्षण कौशल भारत भारती प्रकाशन, वाराणसी
8. विधार्थी टंडन एवं पांग्वी - गृह विज्ञान, इण्डिन प्रेस, प्रयाग, इलाहाबाद

Corresponding Author

Dr. Rani Mahto*

Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan